गुजरात और उसके बाद

कविता

गुजरात के चुनाव नतीजों से उन लोगों को निश्चित ही धक्का लगा होगा जो अपनी आदर्शवादी सोच के चलते यह मानने को कतई तैयार नहीं थे कि गांधी की धरती पर रहने वाली हिन्दू जनता का मानस किसी भी सूरत में इतना जहरीला नहीं बनाया जा सकता कि वह मुसलमानों के नरसंहार के मुख्य हत्यारे नरेन्द्र मोदी को दुबारा सत्ता में पहुंचा दे। वे लोग भी जरूरत हतप्रभ हुए होंगे जो कांग्रेसी धर्मनिरपेक्षता के व्यामोह से बाहर निकलने के लिए तैयार नहीं थे। लेकिन 'हिन्दुत्व की प्रयोगशाला' में लम्बे समय से जिस निर्विघ्न ढंग से प्रयोग चल रहा था उसे देखते हुए वास्तव में ऐसा कोई भी कारण सामने नहीं था जिसके आधार पर यह उम्मीद पाली जाती कि प्रयोग सफल नहीं होगा।

संघ परिवार के साम्प्रदायिक फासीवाद अभियान का मुकाबला किसी भी चुनावी जोड़-तोड़ के सहारे करने की बात सोचना आत्मघाती मुगालते में जीना होगा। लेकिन 'गुजरात प्रयोग' की सफलता के बाद भी ऐसे धर्मनिरपेक्ष-प्रगतिशीलों की कमी नहीं हैं जो गुजरात में भाजपा के खिलाफ संसदीय विपक्षी दलों द्वारा एकजुट चुनौती न दे पाने को कसूरवार ठहरा रहे हैं। दरअसल साम्प्रदायिक फासीवाद के खिलाफ संसद के भीतर और मीडिया के जरिये हुंकार भरने वाले सी.पी.आई. व सी.पी.एम. जैसी नकली वामपंथी पार्टियों के नेता इतने सुविधापरस्त हो चुके हैं कि उनसे संसदीय राजनीति की चौहद्दी को तोड़कर मेहनतकश अवाम को संगठित करने की जमीनी कार्रवाईयों में जुटने की उम्मीद ही नहीं की जा सकती। न ही अल्पसंख्यकों के स्वयंभू मसीहा बने मुलायम सिंह यादव और उनकी बिग्रेड से ही यह उम्मीद पाली जा सकती है। रही बात कांग्रेसी धर्मनिरपेक्षता की तो उसकी असलियत पहले ही इतनी बार उजागर हो चुकी है कि उससे रत्तीभर उम्मीद पालना विकल्पहीनता के चलते पैदा हुई थकी-हारी मानसिकता के अलावा कुछ नहीं है।

अगर चुनावी मुकाबले की ही बात करें तो नतीजों के पहले ही कांग्रेस ने अपनी हार तय कर ली थी। ऐसे समय में जबकि मोदी की पलटन मुसलमानों के खून का तिलक लगाये और नरमुण्डों की माला पहने समूचे गुजरात में अट्टहास करता घूम रहा हो तो कांग्रेस ने 'नरम हिन्दुत्व' की लाइन पर चुनाव जीतने की रणनीति बनायी। मोदी के मुकाबले पुराने संघी काडर शंकर सिंह वाघेला को खड़ा किया गया और वघेला भाटी जी महाराज से आशीर्वाद लेकर मोदी का मुकाबला करने निकले। चमचमाते तलवारों-त्रिशूलों-कटारों के मुकाबले गत्ते की तलवारें लेकर कांग्रेसी 'धर्मनिरपेक्ष' फौज चुनावी जंग में कूदी थी। ऐसे में कोई अलग नतीजा भी कैसे सामने आ सकता था। लेकिन कांगेसी 'धर्मनिरपेक्षता' के रणनीतिकार गुजरात से भी सबक सीखने के लिए तैयार नहीं है। 'उदार हिन्दुत्व' भी अन्तोगत्वा 'अनुदार हिन्दुत्व' के रूप में खड़ा होता है। यह नतीजा देखने के बाद भी मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ जैसे अपने राज्यों में अपनी जमीन बचाने के लिए कांग्रेसी रामायण मेले आयोजित करवा रहे हैं और विश्व हिन्दू परिषद के अगिया बैताल साधु सन्तों के मुकाबले उदार साधु सन्तों की लाइन लगवा रहे हैं। कांग्रेसी चुनावी रणनीति से ज्यादा यह उसकी 'धर्मनिरपेक्षता' के दिवालियेपन का नमूना है। 'सर्वधर्मसमभाव' वाली धर्मनिरपेक्षता का हश्र यही होना था।

बहरहाल अब मोदी की दुबारा ताजपोशी के बाद 'हिन्दुत्ववादी' फासीवादी ताकतों के हौसले बुलन्दी पर हैं। फासीवादी अभियान के नये आक्रामक दौर के घण्ट-घड़ियाल बज चुके हैं। ऐलान हो चुका है कि 'गुजरात प्रयोग' को पूरे देश में दुहराया जायेगा। 'गुजरात प्रयोग' की सफलता से बौराए प्रवीण तोगड़िया ने यहां तक घोषणा कर दी है कि अगले दो वर्षों में गुजरात 'हिन्दू राष्ट्र' बन जायेगा। पूरे देश में 'हिन्दुत्व' के विरोधियों से निपटने की धमकियां दी जा रही है।

यह एक सुनियोजित नरसंहार था'

गोधरा की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बाद गुजरात में जो हुआ वह 'क्रिया की स्वभाविक प्रतिक्रिया' नहीं थी, जैसा कि संघ परिवार के तमाम मुख और मुखौटे बोलते चले आ रहे हैं। तमाम स्वतंत्र जांच दलों के रिपोर्टों और स्वयं सरकार द्वारा गठित राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने भी यह माना है कि गुजरात में गोधरा की घटना के बाद राज्य द्वारा प्रायोजित नरसंहार किया गया जिसमें कई हजार मुसलमान मारे गये और लाखों लोगों की आजीविका के साधन नेस्तनाबूद कर दिये गये और वे शरणार्थी बना दिये गये।

नवम्बर' 02 के आखिरी महीने में रिलीज हुई न्यायमूर्ति (अवकाश प्राप्त) वी.आर. कृष्णा अय्यर की अध्यक्षता वाली 'नागरिक पंचाट' की रिपोर्ट में भी साफ तौर पर कहा गया है कि गोधरा की घटना के बाद गुजरात में जो हुआ वह 'नरसंहार की परिभाषा के तहत आता है। इसकी योजना छह महीने पहले ही बना ली गयी गयी थी।' "जबकि गोधरा की घटना स्वतः स्फूर्त थी। इसे अंजाम देने वाले "रंगरूटों" को "बताया जा चुका था कि कुछ होने वाला है"। संभवत अयोध्या की घटनाओं के साथ तालमेल बैठाते हुए मध्य मार्च तक इसे अंजाम देने की तैयारी थी। इसी बीच "27 फरवरी की घटना उनके लिए वरदान साबित हो गयी।"

उधर संघ परिवार के रणनीतिकर गुजरात में आक्रामक हिन्दुत्व की सफलता के बाद भी नरम गरम का खेल कुशलता से खेल रहे हैं। एक तरफ अगिया बैतालों को कुछ भी बकने की छूट मिली हुई है और दूसरी तरफ अटल बिहारी जैसे 'उदारवादियों' को भी 'चिन्तन' की छूट है। उदार-अनुदार दोनों खेमों के खिलाड़ियों को सार्वजनिक रूप से एक दूसरे के खिलाफ आस्तीनें चढ़ाने की भी छूट है। यूं कुछ लोग मानते हैं कि संघ परिवार के भीतर सचमुच अन्दरूनी अन्तविरोध हों ऐसा होने पर भी यह मुख्य पहलू कतई नहीं है। मुख्य पहलू यही है कि एक दूसरे की विरोधी दिखने वाली भंगिमाओं का कुशलतापूर्वक संघी एजेण्डे को आगे बढ़ाने के लिए कैसे इस्तेमाल किया जाये। इसमें दो राय नहीं कि संघ परिवार की राजनीतिक शाखा भारतीय जनता पार्टी धीरे-धीरे देश के शासक बुर्जुआ वर्ग ही नहीं

साम्राज्यवादी महाप्रभुओं की भी अधिक से अधिक विश्वासपात्र बनती जा रही है। सरकार में बैठकर वह देशी-विदेशी पूंजीपतियों की मैनेजिंग कमेटी का काम अच्छी तरह संभाल रही है। लेकिन फिर भी देश का बुर्जुआ वर्ग और साम्राज्यवादी दोनों ही भाजपा के प्रति अभी पूरी तरह दुविधा मुक्त नहीं हो पाये हैं।

इनकी दुविधा यह है कि अभी भूमण्डलीकरण की नीतियां अमल में पूरी तरह स्थायित्व नहीं ग्रहण कर पायी हैं। देश के विभिन्न इलाकों में देशी-विदेशी पूंजी के निवेश के लिए जो 'सामाजिक शान्ति' चाहिए वह भाजपा के फासीवादी एजेण्डे को उग्रता के साथ लागू करने के कारण भंग हो जा रही है। अकेले गुजरात की घटनाओं ने पूंजीनिवेश को प्रभावित किया हैं उनकी चिन्ता यह भी है कि अगर गुजरात जैसा नरसंहार होगा तो इसकी प्रतिक्रियास्वरूप अक्षरधाम जैसी घटनाएं भी होंगी। जिसके सामाजिक शान्ति को दुहरा खतरा पैदा होगा। लेकिन, इसके साथ ही भूमण्डलीकरण के नतीजों से पैदा हो रहे जनअसंतोष को शान्त करने के लिए जनता को बांटना और छद्म दुश्मन भी खड़ा करना भारतीय शासक वर्ग की जरूरत है। इसलिए उसे हिन्दू राष्ट्रवाद या सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का नारा जनता में पड़ोसी देश के प्रति अन्धराष्ट्रवादी भावनाएं भड़काने और जनता को बांटने के दोनों मंसूबों को पूरा करता नज़र आ रहा है। दरअसल यह भारतीय शासक वर्ग की ही दुविधा नहीं है बल्कि पाकिस्तानी हुक्मरान भी इसी पशोपेश में पड़े हुए हैं। मुशर्रफ के भारत विरोधी तेवर और कश्मीरियों के संघर्ष के प्रति समर्थन देना पाकिस्तानी अवाम के भीतर अन्धराष्ट्रवादी भावनाओं को भड़काने के हथकण्डे हैं जिससे घरेलू असन्तोष पर काबू पाया जा सके। पाकिस्तानी हुक्मरान को कश्मीरियों की आजादी की लड़ाई से कोई लेना-देना नहीं हैं। दरअसल दोनों ही देशों के शासक वर्ग यह तो चाहते हैं कि देश के भीतर जनता के विभिन्न हिस्सों के बीच साम्प्रदायिक तनाव व युद्धोन्माद बना रहे लेकिन गुजरात नरसंहार व अक्षरधाम जैसी घटनाओं को वे फिलहाल टालना चाहते हैं। गुजरात नरसंहार के प्रति देश के बुर्जुआ मीडिया के मुख्य हिस्से के आलोचनात्मक रुख को शासक वर्गों की इसी दुविधा के रूप में देखा जाना चाहिए।

अमेरिका सहित सभी साम्राज्यवादी देशों के हुक्मरान की वही दुविधाएं और जरूरते हैं जो भारतीय एवं पाकिस्तानी शासक वर्गों की। वे समूचे भारतीय उपमहाद्वीप में तनाव व अशान्ति का वातावरण तो बनाये रखना चाहते हैं पर न वे गुजरात जैसे हालात के पक्ष में हैं और न ही भारत व पाकिस्तान के बीच युद्ध ही चाहते हैं। फिलहाल पूंजीनिवेश के लिए उन्हें 'सामाजिक शान्ति' चाहिए जिससे संकटों में फंसी उनकी अर्थव्यवस्थाओं को राहत मिल सके।

दरअसल भारतीय शासक वर्ग और उनके साम्राज्यवादी आका हिन्दू साम्प्रदायिक फासीवाद को जंजीर में बंधे शिकारी कुत्ते की तरह फिलहाल नियंत्रित रखना चाहते हैं। आने वाले दिनों में जब व्यवस्था के प्रति जन असंतोष के उग्र रूप अख्तियार करने का अन्देशा होगा तो उस समय के लिए वे इस विकल्प को सुरक्षित रखना चाहते हैं।

देशी-विदेशी आकाओं के इसी रुख के मद्देनजर वाजपेयी और आडवाणी गाहे-बगाहे गुजरात की घटनाओं पर 'शर्म' महसूस करते दिख जाते हैं और उनकी पुनरावृत्ति न होने देने का आश्वासन देते नजर आ जाते हैं। जनवरी' 03 के पहले हफ्ते में हुए प्रवासी भारतीयों के जमावड़े के मौके पर आडवाणी तक ने अनिवासी भारतीयों की सभा में एक बार फिर गुजरात के 'दंगों' पर 'शर्मसार' हुए और ऐसी घटनाओं को दुबारा न होने देने का आश्वासन दिया। साम्राज्यवादियों की दुविधाओं को दूर करने और उनके बीच अपनी राजनीतिक विश्वसनीयता कायम करने की कोशिश के ही तहत पिछले दिनों भाजपा अध्यक्ष वेंकैया नायडू ने साठ देशों के राजदूतों को भोजन पर बुलाकर 'हिन्दू राष्ट्रवाद' और 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' पर क्लास भी लिया है।

लेकिन मुसीबत यह है कि शासक वर्गों की चाहतें और उनकी राजनीति के तकाजे अक्सर एक दूसरे के आमने-सामने खड़े हो जाते हैं। 'नियंत्रित फासीवाद' शासक वर्गों की चाहत हो सकती है और शासक वर्गों की विश्वसनीय पार्टी बनने के लिए भाजपा इस चाहत को पूरी करने में जी जान से जुटी भी हुई है। लेकिन भारतीय जनता पार्टी के जो अपने राजनीतिक तकाजें हैं वे इन चाहतों के आड़े आ जाते हैं। चाहे लोकसभा चुनाव हो या विधानसभा चुनाव, भाजपा की मजबूरी यह है कि उसके पास हिन्दू वोटों के ध्रुवीकरण के अलावा दूसरा कोई चुनाव जिताऊ मुद्दा नहीं है। इसीलिए उग्र हिन्दुत्व की शरण में जाकर मतदाताओं के साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की रणनीति पर अमल कर रही है। विहिप-बजरंग दल को भाजपा नेताओं की सार्वजनिक डांट-फटकार भी उसकी रणनीति का ही अंग है। वह उदार हिन्दू मतों को भी दूर नहीं जाने देना चाहती और अनुदार हिन्दू मत तो उसके साथ हैं ही। गुजरात में उग्र हिन्दुत्व की लाइन ने ही मोदी की वापसी करायी है। इसलिए फिलहाल वह आगामी छह महीने में होने वाले दस राज्यों के विधानसभा चुनावों और डेढ़ साल बाद होने वाले लोकसभा चुनाव भी इसी लाइन पर लड़ना चाहती है। गुजरात प्रयोग को देशव्यापी बनाने के बयान सिर्फ मुसलमानों को डराने के लिए नहीं वरन यह संकेत है कि अब उग्र हिन्दुत्व की लाइन ही देशभर में लागू होगी। शासक वर्ग भले चाहे कि शिकारी कुत्ता जंजीर में बंधा रहे लेकिन भाजपा अपनी राजनीतिक जरूरत को पूरा करने के लिए जंजीर खोल भी सकती है, जैसा उसने गुजरात में किया। दरअसल, हिन्दू साम्प्रदायिक फासीवाद भारतीय पूंजीवाद का नासूर बन गया है। यह उसके शरीर का हिस्सा बन गया है, लगातार टीसता रहेगा इसलिए अगर इस नासूर को खत्म करना है तो पूंजीवाद को खत्म करना होगा। गुजरात के बाद जो हालात बन रहे हैं वे बेहद चिन्तनीय हैं, खतरनाक हैं। फासीवाद राक्षस को नियंत्रित नहीं किया जा सकता। उसका सिर्फ संहार हो सकता है। जब तक इसका संहार नहीं होगा तब तक यह मानव रक्त पीता रहेगा, अट्टहास करता गलियों में बेधड़क घूमता रहेगा। इसलिए आज जरूरत है कि इसका संहार करने वाली सामाजिक ताकतों को जगाया जाये। चुनावी जोड़- तोड़ से इसका मुकाबला नहीं किया जा सकता। संसदीय राजनीति की गत्ते की तलवारों से इसका वध नहीं हो सकता है। देश की मेहनतकश आबादी की क्रान्तिकारी एकजुटता के दम पर ही साम्प्रदायिक फासीवाद के राक्षस का संहार किया जा सकता है। यदि इस दिशा में हमने ठोस, जमीनी स्तर पर तैयारियां अभी से नहीं शुरू कीं तो पूरे मुल्क में बर्बरता का राज कायम हो जायेगा। जर्मनी की क्रान्तिकारी *क्लारा जेटकिन* ने जर्मन फासीवादियों की करतूतों को देखते हुए कहा था कि इन्सानियत के सामने अब सिर्फ दो ही विकल्प हैं- समाजवाद या बर्बरता। आज यही दोनों विकल्प हमारे सामने भी खड़े हैं। चुनाव हमें करना है।सचमुच बीच का कोई रास्ता नहीं बचा है। मेहनतकशों के बहादुर व विवेकवान बेटे-बेटियां अगर फैसलाकुन ढंग से यह बात समझ जायें तो साम्प्रदायिक फासीवाद के राक्षस का वध करना कोई कठिन काम नहीं है। जब उजाले की ताकतें सोयी रहती हैं तभी अन्धेरा अट्टहास करता है। इसलिए हमें खुद भी जागना होगा और समूचे मेहनतकश अवाम को जगाने का बीड़ा उठाना होगा नहीं तो बर्बरता का परचम गुजरात से आगे बढ़कर समूचे देश में लहरायेगा।